

يَآيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْٓا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ نَارًا وَّقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ
﴿سورۃ التحریم آیت: ۶﴾

اے ایمان والو! اپنی جانوں اور اپنے گھر والوں کو اس آگ سے بچاؤ جس کے ایندھن آدمی اور پتھر ہیں۔
﴿کنزالایمان﴾

جشن دستار بندی پر ایک حسین پیش کش

ماڈرن زمانے میں بچوں کی تربیت کیسے کریں؟

تالیف
قاری شاہد رضا قادری مظہری
Nutrition Counselor & Digital Marketer
Mob. 9557706455, 7906445684

SABRI PRINTING PRESS



يَآيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْٓا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ نَارًا وَّقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ
﴿سورۃ التحریم آیت: ۶﴾

ऐ ईमान वालो! अपनी जानों और अपने घर वालों को उस आग से बचाव जिसके ईधन आदमी और पत्थर हैं। (कन्जुल ईमान)

जश्ने दस्तार बन्दी पर एकहसीन पेशकश

मॉर्डन ज़माने में बच्चों की तरबियत कैसे करे

-: मोअल्लिफ़ :-
क़ारी शाहिद रज़ा क़ादरी मज़हरी
Nutrition Counselor & Digital Marketer

-: हिन्दी मुतरजिम :-
क़ारी अनस रज़ा क़ादरी मज़हरी
Mob. 9457672106, 9574266329

बमौक़ा जश्ने दस्तारे किरात (ख़ुसूसी)

तर्जुमाः– ऐ ईमान वालो! अपनी जानों और अपने घर वलों को उस घर वालोंकोआग से बचाव जिसके ईधन आदमी और पत्थर हैं। (कनजुलईमान)

मार्डन ज़मानेमेंबच्चों की तरबियत कैसे करें?

तालीफ़
शाहिद रज़ा क़ादरी
हिन्दी तर्जुमा अनस रज़ा क़ादरी

जुम्ला हुकूक़ ब–हक़्क़े नाशिर महफ़ूज़ हैं

नाम किताबः मॉर्डन ज़माने में बच्चों की तरबियत कैसे करें
तालीफ़ः क़ारी शाहिद रज़ा क़ादरी
हिन्दी मुतरजिमःकारी अनस रज़ा क़ादरी
नज़रे अव्वलः मौलाना ज़ाकिर रज़ा ख़ान
मोहतमिम मदरसा जामिया ग़ौसिया तालीमे निसवां बरेली शरीफ़
नज़रे सानीः मौलाना अमानत हुसैन व शाकिर रज़ा
बामौक़ाः जश्ने दस्तारे क़िरात (ख़ुसूसी)
दारुल उलू मज़हरे इस्लाम, बरेली शरीफ़
तादादः 1000
कीमतः
सन् तबाअतः 14 शाबनुल मोअज़्ज़म 1441 हि0
मुताबिक़ 8 अप्रैल–2020 ई0 बरोज़ बुध
कम्पोज़िंगः ताहिर रज़ा, (बरेली–8006080927)
पिन्टिंगः साबरी प्रिन्टिग प्रेस–9927866020
बड़ा बज़ार, बरेली शरीफ़

फहरिसत मज़मून





ख़िराजे अक़ीदत

बारगाहे रिसालत मआ़ब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम व जुम्ला अम्बिया अलैहिमुस्सलाम तमाम सहाबा, शोहदा, मोहद्दिसीन, आइम्मा, सिद्दीक़ीन व स्वालेहीन रिज़वानुल्लाहि तआ़ला अज़मईन आस्था स्वरूप अर्पित करता हूँ।

शर्फ़े इन्तिसाब

अमुल्य ज्ञानी तुच्छ कोशिश को आदरणीय तमाम असातज़ा–ए–किराम, प्रिय वालिद व वाल्दा सहायनीय, ब्रादरान व तमाम अज़ीज़ व अक़ारिब के समक्ष स्थाई रूप से सम्पूर्ण समर्पित करता हूँ।

फ़क़त
मोहम्मद अनस रज़ा क़ादरी मज़हरी



पेशे लफ़्ज़

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्हमदु लिल्लाहि रब्बिल अलमीन वस्सलातु वस्सलामु अला सय्यिदिल आलमीन व आलिही वब्निही व हिज़बिही अजमईन

हर क़ौम में तोहफ़ा लेने और देने का रिवाज आम है जब भी कोई ख़ुशी का मौक़ा होता है तोलोग एक दूसरे को तोहफ़ा लेते और देते हैं हमारा इस्लाम एक आफ़ाक़ी मज़हब है वह मुकम्मल निज़ामे हयात की रहनुमाई करता है चुनांचे फ़रमाने मुस्तफ़ा सलल्लाहु अलैहि वसल्लम आली शान है कि एक दूसरे को तोहफ़ा दो, आपस में मोहब्बत बढ़ेगी। (मोता इमामे मालिक जि0 2, स0 407, रक़म 1731)

चूँकि हमारी दस्तारे क़िराअ़त है तो हमने भी एक अज़्म किया है कि अपने दोस्त व अहबाब को तोहफ़े की शक्ल में एक किताब दूँ, पस इस अह़कर ने तरबियते औलाद के मौज़ू पर एक किताबचा क़लमबन्द किया ख़ुसूसीतौर पर इस दौरे जदीद में नई नसल की तरबियत कैसे की जाये इसी पर रौशनी डाली है। अगर बच्चों और बच्चियों को इस किताब के मुताबिक़ इस्लामी तआ़लीमो तरबियत की जाये तो बेहतरीन इस्लामी नस्ल तैयार होगी। ख़सूसन इस दौरे इल्हाद में जिसके तेज़ो तुन्द झोंके तेज़ी के साथ इस्लामी नस्ल को अपनी लपेट में लेकर बरबाद कर रहे हैं। इसलिए इन बच्चों को इस्लामी तालीम व तरबियत की तरफ़ मुतवज्जा करना अशद ज़रूरी है। क्योंकि बच्चे अपनी क़ौम का मुस्तक़बिल और बेशक़ीमत मताअ़ होते हैं। इस्लाम में बच्चों के लिए बेशुमार मुफ़ीद और पाकीज़ा नसीहतें हैं जो



नफ़सियाती सफ़ाई और रूहानियत की ताज़गी का सबब बनती है तक़रीबन हर अज़ीम शख़्सियत ने बच्चों के लिए मुफ़ीद नसीहतों की पाकीज़ा मीरास छोड़ी है जो अख़लाक़ो आदाब के हामिल है। मादियत और भाग–दौड़ के ज़माने में हर शख़्स को अदमे फ़ुरसती का शिकवा है दौलत के हुसूल और ज़िन्दगी के संवारने में आज का इंसान इतना मसरूफ़ हो चुका है कि अपना मक़सदे वुजूद भूल गया है। फिर ऐसे लोग से सैकड़ों सफ़हात पर मुशतमिल किताब पढ़ने की क्या तवक्को की जा सकती है। इसलिए मैंने क़सदन रिसाले को मुख़तसर करने की कोशिश की कि आदमी चाहे तो एक बैठक में पूरी किताब का मुतआला कर सकता है। मैंने इस किताब को हर मुमकिन तरीक़े से बेहतर से बेहत बनाने की कोशिश की है। सारे मराहिल बड़े एहतियात से अंजाम दियेगए हैं, लेकिन तक़ाज–ए–बशरी के नाते हो सकता है कि ग़लतियाँ रह गई हों तो अहले इल्म से गुज़ारिश है कि अगर कोई ख़ामी या नुक़्स नज़र आए तो अज़ राहे करम तामीरे इस्लाह फ़रमायें। इन'शा अल्लाह आइंन्दा ऐडीशन में इसकी तसहीह कर दी जायेगी। अख़ीर में समीमे क़ल्ब से शुक्रगुज़ार हूँ मौलाना मोहम्मद अनस रज़ा क़ादरी का जिन्होंने इस किताब को हिन्दी की शक्ल दी ताकि लोगों के लिए मुमिद व मुआविन साबित हो। फ़क़त

अहक़र शाहिद रज़ा क़ादरी मज़हरी
मुतआल्लिम दारुलउलूम मज़हरे इस्लाम
बी.बी.जी. साहिबा मस्जिद, बरेली शरीफ़ (यू.पी.)
बमुक़ाम: 76/10 जमा मस्जिद साइड, अंगस, हुगली, कलकत्ता



अर्ज़े मुतरजिम

نحمده' ونصلی اعلیٰ رسوله الکریم،
واله و اصحابه وصدیقین وصالحین اجمعین۔

अल्हुम्दो लिल्लाह अल्लाह जल्लाजलालहु का बेशुमार शुक्र है कि मेरे रफ़ीक़े हबीब क़ारी शाहिद रज़ा साहब किब्ला ने एक किताबचा तरबियते औलाद के मौज़ू पर हवाल–ए–किरतास किया है यकीनन यह किताब निहायत मुफ़ीद बसीरत अफ़रोज़ है, और मुरब्बीन के लिए इस्लाह व तरबियत के मैदान में शम–ए–रहनुमा है। लिहाज़ा यह किताब इस लायक़ है कि हर घर में पढ़ी और पढ़ाई जाये। इसके मुताबिक़ अपनी ज़िन्दगी व मुआशरे को सुधारा जाये और अपने बच्चों की तरबियत व इस्लाह की जाये।
अल्लाह तबारक व तआला ने सआदत बख़्शी कि मैं इस किताब को हिन्दी पढ़ने व समझने वालों के लिए इस किताब को हिन्दी का जामा पहनाऊँ, ताकि हिन्दीदान लोग इस किताब से इस्तिफ़ादा हासिल करें, पस इस किताब को अपने दस्तारे क़िरात के मौक़े पर मैंने हिन्दी तर्जुमा किया है।

फ़क़त
मोहम्मद अनस रज़ा क़ादरी
उनावा शरीफ़, उनझा, महेसाना, गुजरात



तक़रीज़े जलील

हज़रत अल्लामा व मौलाना सग़ीर अहमद बरकाती
सदरुल मुदर्रिसीन दारुल उलूम मज़हरे इस्लाम

बि–इस्मिहि व हम्दिहि

दौरे हाज़िर में रुश्दो हिदायत इरशाद व तब्लीग़ का मज़बूत ज़रीया तहरीर व क़लम को माना जाता है इसलिए क़ौम का कोई फ़रज़न्द जब अपने दीनी भाइयों को अम्र बिल मारूफ़ और नहींअनिलमुनकर की तब्लीग़ करना चाहता है तो तहरीर व क़लम का सहारा लेता है यूँ तो फी ज़माना अकाबरीन उलेमा–ए–अहले सुन्नत ख़ुसूसन आला हज़रत अज़ीमुल बरकत और आपके रुफ़क़ा व तलामिज़ा की तसानीफ़ व तालीफ़ात मिल्ली हिदायात के लिए काफ़ी है मगर उलमा उन्हीं हज़रात की तहरीरों के हवाले से ज़रूरते वक़्त के मुताबिक़ अख़ज़ करके पेश फ़रमाते रहते हैं जो बरादराने क़ौम के लिए बहुत मुफ़ीद व मोअस्सिर होती हैं। ज़ेरे नज़र रिसाला मॉर्डन ज़माने में बच्चों की तरबियत कैसे करें इसी तरह की एक कोशिश है जो असरी इल्म से मुज़य्यन दीनी इल्म के शाइक़ दारुल उलूम मज़हरे इस्लाम के शोअ़बा–ए–क़िरात–ए–ख़ुसूसी के एक होनहार तालिबे इल्म अज़ीज़ी क़ारी शाहिद रज़ा क़ादरी सल्लमाहु ने दस्तारे क़िरात के मौक़े पर तालीफ़ की है ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस से दुआ है कि इस रिसाले को मुफ़ीदे ख़ास व आम बनाये और मोअल्लिफ़ को दीनी व दुनियवी कामयाबी व कामरानी से हमकिनार फ़रमाये। आमीन बिजाहिसय्यिदिलमुरसलीन अलैहि नुहफहुवतसलीम

फ़क़त
मोहम्मद सग़ीर अहमद बरकाती मिस्बाही
सदरुल मुदर्रिसीनः दारुल उलूम मज़हरे इस्लाम
मस्जिद बी.बी.जी. साहिबा, बरेली शरीफ़



तकरीब

सदर शोअ़ब–ए–क़िरात यादगारे मुफ़्ती–ए–आज़म हिन्द
उस्ताजुल क़ुर्रा हज़रत अल्लामा व मौलाना
क़ारी अहमद अली रज़वी

हामिदौं व मुसल्लियन

दारुल उलूम मज़हरे इस्लाम के शोब–ए–क़िराते ख़ुसूसी के बा–होश बा–ज़ौक़ मुतअ़ल्लिम अज़ीज़ी कारी शाहिद रज़ा क़ादरी सल्लमहु ने रिसाला मॉर्डन ज़माने में बच्चों की तरबियत कैसे करें का मुबय्यज़ा दिखाया और इस्लाहे मुआ़शरा के मक़सद से अपनी दस्तारे क़िराते ख़ुसूसी के मौक़े पर इसी को दावत नामा के बतौर मुस्लिम भाइयों में तक़सीम करने की बात कही मुझे बे–हद ख़ुशी हुई कि इस शागिर्द ने अम्र बिल मअ़रूफ़ को मशअ़ले राह बनाया जो मर्दे मोमिन का दीनी फ़रीज़ा है अज़ीज़ी कई साल से दारुल उलूम मज़हरे इस्लाम में ज़ेरे तालीम हैं।

चूँकि शोअ़ब–ए–क़िरात की ज़िम्मेदारी फ़क़ीर ही के सुपुर्द है लिहाज़ा फ़क़ीर की निगरानी में मौसूफ़ ने क़िराते ख़ुसूसी का कोर्स मुकम्मल किया है, मौलातआ़ला से दुआ है कि इस रिसाला और मोअल्लिफ़ को मक़बूले ख़ास व आम बनाये और दीन व दुनिया में तरक़्क़ी अता फ़रमाये। आमीन बिहुरमति सय्यिदिल मुरसलीन व आलिहि मुताहिरीन

फ़क़त
मोहम्मद अहमद अली रज़वी
सदर शोअ़ब–ए–क़िरात यादगारे मुफ़्ती–ए–आज़म हिन्द
दारुल उलूम मज़हरे इस्लाम, बरेली शरीफ़ (यू.पी.)



दुआइया कलिमात

नबीर–ए–आलाहज़रत ख़लीफ़–ए–हुज़ूर ताजुश्शरीया, जिगर गोश–ए–रेहाने मिल्लत हज़रत अल्लामा मौलाना मुफ़्ती अरसलान रज़ा ख़ान अज़हरी साहब किब्ला दरगाहे आला हज़रत बरेली शरीफ़ (यू.पी.)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

यादगारे हुज़ूर मुफ़्ती–ए–आज़म–ए–हिन्द यानि दारुल उलूम मज़हरे इस्लाम मस्जिद बी.बी.जी साहिबा के एक नौख़ेज़ व नौ उम्र के तालीबेइल्म ने कुछ लिखने की कोशिश की है और मुझसे दुआओं के तालिब हुए मौला तआ़ला तालिबे इल्म के इल्म में बरकत अता फ़रमाये, लिखने पढ़ने का ज़ौक़ व शौक़ अता फ़रमाये। ज़बान व क़ल्म में तासीर दे और सरकार मुफ़्ती–ए–आज़म के वसीले से यह दुआ कुबूल फ़रमाये।

ख़ुदा ऐसी कुव्वत दे मेरे क़लम में
कि बद्मज़हबों को सुधारा करूँ मैं

आमीन बिजाहे नबीइय्यिलकरीम अलैस्सिलातोतसलीम

फ़क़त
मोहम्मद अरसलान रज़ा ख़ाँ क़ादरी अज़हरी

हरफे नासिहाना

औलाद अल्लाह तआ़ला की एक अज़ीम नेअ़मत है। मगर उसके साथ वालिदैन पर डाली गईअज़ीम ज़िम्मेदारी भी है। जैसा कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है:

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْٓا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ نَارًا وَّقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ

तर्जुमा: ऐ ईमान वालों! अपनी जानों और घर वालों को उस आग से बचाओ जिसके ईंधन आदमी और पत्थर हैं।

(कन्जुलईमान प0 28, आ0 06)

यानि ऐ ईमान वालो! अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की फरमाँबरदारी इख़्तियार कर के अपने घर वालोंऔर बच्चोंकोनेकी की हिदायत और बदी से दूर करे के उन्हें इल्मो अदब सिखा कर अपनी जानों और अपने घर वालों को उस आग सेबचाव जिसका ईंधन आदमी और पत्थर हैं।

लेकिन बद्किस्मती से आज के अक्सर वालिदैन इस हक़ीक़त से नाआशना हो चुके हैं जिसके नतीजे में वो मुआ़शरे को बुरे इंसान देने का सबब बनते हैं। आम तौर पर लोगोंके लिए उनकी औलाद सिर्फ़ मोहब्बत का मौजू होती है। औलाद को लाड़ प्यार करना उनके नखरे उठाना औलाद के लिए कपड़ों और खिलौनोंके ढेर लगा देना उनकी हर जाइज़ और नाजाइज़ ख़्वाहिशोंको पूरा करना उनकी ज़िन्दगी का मक़सद बन जाता है। ऐसे वालिदैन के लिए उनकी औलाद इब्तिदा में एक खिलौना होती है मगर आहिस्ता–आहिस्ता वो ख़ुद अपनी औलाद के हाथों में एक खिलौना बन जाते हैं। औलाद ख़्वाहिश की डुगडुगी बजाती है और वालिदैन बन्दर की तरह उस डुगडुगी पर नाचते हैं। ऐसे वालिदैन तालीम व तरबियत के ऐतबार से अक्सर अपनी ज़िम्मेदारियों से गाफ़िल होते हैं ऐसेलोगों के नज़दीक औलाद के हवाले से असल ज़िम्मेदारी यह

होती है कि उसे किसी इंग्लिश मीडियम स्कूल में दाख़िल कर दिया जाये। वह औलाद की तरबियत के तसव्वुर से वाक़िफ़ ही नहीं होते हैं। अच्छे आदाब व अख़लाक़ की तलक़ीन नेकी और अम्र बिल मअ़रूफ़ (हुस्ने सुलूक) केतआ़ल्लुक़ से बड़े छोटे का लिहाज़ ख़ुदा और बन्दोंके हुक़ूक़ की निगेहबानी को बुनियाद बना कर तरबियत करने के बजाये यह लोग औलाद को टी.वी., मोबाईल फोन, इन्टरनेट के हवाले कर देते हैं। क्योंकि औलाद की ज़िदों और शरारतोंसे निजात का यह फौरी और ज़ूद असर नुस्ख़ा होता है। मगर यह नुस्ख़ा अक्सर उनकी सीरत व शख़्सियत को मन्सूख़ कर देता है। ऐसे बच्चे जब बड़े होते हैं तो मुआ़शरे में नुक़सानात और ख़्वाहिशात के बढ़ाने का बाइस बनते हैं, नीज़ सब्र, ईसार, क़ुरबानी, सादगी, क़नाअ़त, अ़फ़ व दरगुज़र, अमानत व दयानत, अदल व इंसाफ़ और ख़ुश ख़लक़ी जैसे आला सिफ़ात से आरी होते हैं, यह लोग मुआ़शरे को फ़सादात से भर देते हैं। यह लोग न सिर्फ़ दूसरे लोगों को दुख देते हैं बल्कि ख़ुद अपने वालिदैन के बुढ़ापे को बाइसे अज़ीयत बना देते हैं। यह गोया वालिदैन की उसकोताही की नक़द सज़ा होती है जो उन्होंने अपनी औलाद की तरबियत के मामले में ख़र्च की थी। औलाद की तरबियत में कोताही शरीअ़त में एक संगीन गुनाह है और उसकेबारे में वईदें वारिद हुई हैं।

अल–हदीसः हज़रते अब्दुल्लाह बिन उमर रदि अल्लाहो तआ़ला अन्हुमा ने एक शख़्स से फ़रमाया कि अपनेबच्चे की अच्छी तरबियत करो क्योंकि तुमसे तुम्हारी औलाद के बारे में पूछा जायेगा कि तुम ने उसकी कैसी तरबियत की और तुमने उसे क्या सिखाया।

(तरबियते औलाद स0 8662)

उसके बरअक्स जो लोग अपनी औलाद की आला तरबियत कोअपनी ज़िन्दगी का मिशन बना लेते हैं उनकी औलाद दुनिया व



आख़िरत दोनों में उनके लिए आँखों की ठंडक साबित होती है। ऐसे वालिदैन के लिए उनकी औलाद कोई खिलौना नहीं होती बल्कि एक भारी ज़िम्मेदारी और एक मक़सद होती है, यह मक़सद बच्चे की पैदाइश के साथ ही शुरू हो जाते हैं। वह इस मक़सद के लिए हर मुमकिन क़ुरबानी देते हैं और अपनी मौत तक उसे जारी रखते हैं। वह अपने बच्चे को खिलौने ज़रूर दिलाते हैं मगर ख़ुद उनके हाथों में खिलौना नहीं बनते हैं, वह अपने बच्चों की ख़्वाहिशों को मुमकिन हद तक पूरा करने की कोशिश करते हैं। साथ–साथ बच्चों को सब्र और सादगी की तलक़ीन भी करते हैं। वह बच्चों को आला और अच्छी तालीम ज़रूर दिलवातेहैं मगर उनकी तरबियत से हरगिज़ ग़ाफ़िल नहीं होते। वह अपने बच्चों पर एतमाद तो करते हैं। मगर उनकी ज़िद के आगे मजबूर होकर उन्हें मोबाईल, टी.वी. और इन्टरनेट के ग़लत इस्तेमाल की हरगिज़ इजाज़त नहीं देते हैं। वह बच्चों की आज़ादी में तो हाइल नहीं होते लेकिन उन्हें ख़ुदा की बन्दगी का सबक सिखाने में भी कोई कोताही नहीं करते। औलाद को अल्लाह तआ़ला ने एक आज़माइश क़रार दिया है। इरशादे बारी तआ़ला हैः

وَاعْلَمُوْا اَنَّمَا اَمْوَالُكُمْ وَاَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗۤ اَجْرٌ عَظِيْمٌ۔

तर्जुमाः और जान लो कि तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद एक इम्तिहान है और यह कि अल्लाह के पास बड़ा सवाब है।

(सू0 अनफ़ाल, आ0 28, कन्ज़ुलईमान)

इस आज़माइश में सुर्ख रुह होने का वाहिद ज़रिया औलाद की अच्छी तरबियत है। अल्लाह तआ़ला हम सबको अपने अज़ाब से बचाये। शरीअ़त के मुताबिक़ ख़ुद को चलने और अपनी औलाद को चलाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

(आमीन बिजाहिन्नबीइलकरीम सल्लल्लाहो अलैहिवसल्लम)





तरबियत क्या है?

लफ़्ज़े तरबियत एक वसी मफ़हूम वाला लफ़्ज़ है। तरबियत का लफ़्ज़ी माना नश व नुमाँ करना। निगरानी करना, तालीम व तहज़ीब सिखाना है, इस लफ़्ज़ के तहत लोगों की तरबियत, ख़ानदान की तरबियत, मुआशरा (समाज) की तरबियत भी शामिल है। इंसानी तरबियत, ईमानी तरबियत, अख़्लाक़ी तरबियत, नफ़्सियाती तरबियत, अदबी तरबियत, जिस्मानी तरबियत वग़ैरह भी शामिल है। इन तमाम बातों में तरबियत का असल मक़सद उम्दा पाकीज़ा, बा–अख़्लाक़, बा–किरदार, मुआशरेका वुजूद है। आसान लफ़्ज़ों में तरबियत को यूँ कहा जा सकता है:

1. इंसान अपनी नीयतों में पाकीज़ा और अपनी आरज़ुओं में पाक हो जाये।
2. इंसान में ख़ुद एहतिसाबी (अपने अमल की इस्लाह) का अमल जारी होकर अपने कमाल तक पहँच जाये।
3. इंसान अपनी मरज़ी से अपने इख़्तियार का दुरुस्त इस्तेमाल करे।

Making people scanceble in there choices, making people responsible and scanceble in there choices.

तरबियत यह है कि लोगोंको उनके इन्तिख़ाब में, समझदार बनाना, लोगोंको उनके पसन्द में ज़िम्मेदार बनाना हैं।

Tarbiyah is not training, Tarbiyah is actually mentoring.

तरबियत यह है कि जब बच्चा नमाज़ पढ़े तो वह किसी ख़ौफ़ या किसी लालच की वजह से न पढ़े बल्कि नमाज़ उसका पसन्दीदा अमल हो जाये।





तरबियते औलाद की अहमियत

आज के इस तरक़्क़ीयाफ़्ता दौर में हर कोई यह रोना रो रहा है कि मुआशरा बड़ा ख़राब है आज का माहौल अच्छा नहीं, और यह रोना कोई बेजा नहीं है। बल्कि सही है, लेकिन क्या सिर्फ़ रोने ध ाोने से मुआशरा दुरुस्त हो जायेगा? हरगिज़ नहीं, बल्कि मुआशरे को ठीक करने के लिए हमें अमली मेहनत करनी पड़ेगी। इस्लाहे मुआशरा के लिए सब से पहले अपने घर की इस्लाह करनी पड़ेगी अपने घर के लोगों को इस्लामी तालीम से वाक़िफ़त करानी पड़ेगी। और अहकामे इस्लाम पर अमल करने की तलक़ीन करनी पड़ेगी और अपने बच्चों की तरबियत इब्तिदा ही से अच्छे अंदाज़ से करनी होगी। क्योंकि यही बच्चे कल ख़ुद अपने बच्चों के माँ–बाप बनेंगे। इसलिए बचपन का ज़माना इन्तिहाई अहमियत का हामिल होता है। और बच्चे ही मुआशरे के अफ़राद हैं। मुआशरे के अफ़राद जब सही हो जायेंगे। मुआशरा ख़ुद बा ख़ुद सही हो जायेगा। गोया इस से मालूम होता है कि इस्लाहे मुआशरा के लिए औलाद की तरबियत रीढ़ की हड्डी की मिस्ल है। अगर हम अपनी औलाद की इस्लाह और अच्छी तरबियत करेंगे। तो यह तरबियत रफ़्ता–रफ़्ता पूरे मुआशरे की इस्लाह हो जायेगी। लेकिन इस ज़माना में मुसलमानों में दीनी तालीम व तरबियत देने और तक़्वा परहेज़गारी के बजाये सिर्फ़ दुनियावी उलूम व फ़ुनून की तालीम व तरबियत पर भरपूर तवज्जो देने की बीमारी आम हो गई है। लेकिन अल्लाह तआला कुरआन–ए–मजीद में इरशाद फ़रमाता है:

اَیَحۡسَبُوۡنَ اَنَّمَا نُمِدُّھُمۡ بِہٖ مِنۡ مَّا لٍ وَّ بَنِیۡنَ(۵۵)نُسَا رِعُ لَھُمۡ فِی
الۡخَیۡرٰتِ بَلۡ لَّایَشۡعُرُوۡنَ۔﴿سورہ،مؤمنون؛پارہ،۱۸،آیت،۵۵،۵۶﴾

तर्जुमाः क्या यह ख़्याल कर रहे हैं कि वह जो हम माल और बेटों



के साथ उनकी मदद कर रहे हैं तो उनके लिए भलाईयों में जल्दी कर रहे हैं बल्कि उनकों ख़बर नहीं। (सूरह मोमिनून आ0 55, 56 कन्जुलइरफ़ान)

लिहाज़ा मुरब्बी को चाहिए कि बच्चे की तालीम व तरबियत इस्लामी तरीक़े के मुताबिक़ अपने ऊपर वाजिब समझें ताकि बच्चे दुनिया व आख़िरत के लिए भलाई का सबब बनें।

तरबियते औलाद क्यों ज़रूरी है?

हमारा सब से बड़ा सरमाया और एक क़ीमती दौलत हमारी औलाद है, उन्हें अच्छी और स्वालेह तरबियत देना जहाँ हमारी आख़िरत की बेहतरी की ज़मानत है वहीं हमारे बुढ़ापे का हुस्न और राहत व आरामदाह और मुआशरती इज़्ज़त का ज़रीया भी हैं। बहुत सारे लोग सुबह सेलेकर शाम तक एक ही फ़िक्र मेंसारा वक़्त काट देते हैं कि दौलत कैसे कमाई जाये। और किस तरह माल जमा किया जाये, और यह माल औलाद के लिए जमा कर रहे होते हैं, लेकिन जिस औलाद के लिए माल जमा कर रहे थे, वो औलाद बिगड़ गई, शैतान के जाल में फंस गई बुरे अख़लाक़ का हामिल हो गई। फिर हम सोचते हैं कि जिसके लिए दिन और रात एक कर के कमाया अपना चैन गंवाया अपनी जवानी भी गँवा दी, इन हसीन लम्हों से लुत्फ़अन्दोज़ होने के वजाये एक मज़दूर की तरह कामकरते रहे तो आज वह औलाद हमारे बुढ़ापे का सहारा नहीं बल्कि हमारे लिए रुसवाई, ज़िल्लत, सूऊबत और परेशानी दुख व सदमे का ज़रीआ बन रही है। काश हमने अपनी औलाद को अच्छे अख़लाक़ और ख़ूबसूरत किरदार सिखाए होते, उसका नतीजा हम अपनी आँखोंसे देख पाते इस्लाम एक मुकम्मल दीन है। उसने अपने मानने

वालों की तमाम ज़िन्दगी के हिस्से में पूरी रहनुमाई की है। हमें औलाद की तरबियत और उन्हें अच्छे अख़लाक़ का ख़ूगर बनाने के लिए मुसलसल जिद्देजहद करने की तरग़ीब दी है। ताकि हमारी औलाद एक अच्छे मुआशरे की शक्ल का सबब बने। और हम उस औलाद से दुनिया में इज़्ज़त और फरहत व सुरूर की खुशबू से मोअत्तर हों और हमारी क़ब्र का चिराग़ भी रौशन हो और आख़िरत में हमारी इज़्ज़त अफ़ज़ाई और बख़्शिश का ज़रिया बने।

तरबियत का आग़ाज़ कब से होता है?

बच्चे की तरबियत का आग़ाज़ उसी वक़्त से हो जाता है जब बच्चा माँ के शिकम में होता है माहिरीन (वैज्ञानिक) कहते हैं कि बच्चे को जब माँ के पेट में चार से पाँच महीने गुज़र जाते हैं। चार महीने गुज़र जाने के बाद जो आवाज़ बच्चा माँ के शिकम में सुनता है वो माँ की दिल की धड़कन है। इसलिए वालिद को चाहिए कि जब बच्चे की माँ उम्मीद से हो तो उस वक़्त उससे बुलन्द आवाज़ से गुफ़्तगू न करे। डाँट–डपट, गाली–गलौज से परहेज़ करे। चूँकि ऐसा करने से बच्चा जो पैदा होगा उस पर मन्फ़ी (नकारात्मक) असरात , चिढ़चिड़ापन, तल्ख ज़ुबान, बे–अदब हो जाता है। इसलिए वालिद को चाहिए कि जब बीवी पेट से हो तो उसे ख़ुश रखा जाये। उसकी ज़रूरतों को पूरा किया जाये और बच्चे की माँ को चाहिए कि बच्चा जब पेट में हो तो फहशगोई, गाली–गलौज, झगड़ा, लड़ाई न करे आज के इस मौजूदा दौर में अक्सर माँओं का हाल यह है कि बच्चा जब पेट में होता है तो वो फिल्मी एक्टर की बात कर रही होती है, किसी टी.वी. सीरियल की बात कर रही होती है। नाच–गाने में मगन रहती है, लिहाज़ा

उससे गुरेज़ करना चाहिए क्योंकि इस से बच्चे पर बुरे असरात पड़ते हैं, आप कहेंगे वो कैसे? आप ग़ौसे आज़म रदि अल्लाहोतआला अन्हु की सीरत पढ़ेंगे तो मालूम होगा कि जब ग़ौसे आज़म अब्दुल क़ादिर जीलानी (रदि अल्लाहु तआला अन्हु) माँ के पेट में थे तो उनकी माँ रोज़ाना कुरआन की तिलावत किया करती थीं। जब ग़ौसे आज़म (रदि अल्लाहु तआला अन्हु) की विलादत हुई तो फिर जब उनकी माँ मदरसा ले गई और कहा इस बच्चे की बिस्मिल्लाह ख़्वानी करवानी है तो उस्ताद ने कहा अब्दुल क़ादिर पढ़ो: 'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम' तो ग़ौसे आज़म (रदि अल्लाहु तआला अन्हु) ने बिस्मिल्लाह के साथ कुरआन के 18 पारे सुना दिये। हुज़ूर ग़ौसेआज़म (रदि अल्लाहु तआला अन्हु) से पूछा गया कि आपने कैसे सुना दिये तो ग़ौसे आज़म (रदि अल्लाहु तआला अन्हु) ने फ़रमाया कि जब मैं अपनी माँ के पेट में था तो मेरी माँ रोज़ाना कुरआने पाक तिलावत किया करती थीं जिसको मैं सुना करता था। और याद किया करता था। लिहाज़ा इस से पता चला कि बच्चा माँ के पेट में सब कुछ सुन रहा होता है। इस लिए माँओं को चाहिए कि जब बच्चा पेट में हो तो कुरआन की तिलावत करें, नातें पढ़ें ताकि जब बच्चा पैदा हो तो वह नेक और स्वालेह हो।

अब बच्चे की पैदाइश के बाद दो साल की उम्र तक इसी तरकीब को जारी रखें, बच्चे के सामने कुरआन की तिलावत की जाये माँ जब कुरआन की तिलावत करे तो बच्चे को साथ बिठा ले अगर वालिद तिलावते कुआन करे तो बच्चे को साथ बिठा ले, बच्चेके सामने नाते पाक के नग़मात गुनगुनायें वालिद को चाहिये कि बच्चे के सामने बच्चे की माँ से बुलन्द आवाज़ से बात न करे।



बच्चे की माँ को चाहिए कि बच्चे को पूरे दो साल की उम्र तक दूध पिलाये जैसाकि कुरआने मजीद में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है:

وَالْوَالِدٰتُ يُرْضِعْنَ اَوْلَادَهُنَّ حَوْلَيْنِ كَامِلَيْنِ لِمَنْ اَرَادَاَنْ يُّتِمَّ الرَّضَاعَةَ۝

तुर्जुमा: और माँयें अपने बच्चों को पूरे दो साल दूध पिलायें।
(सू0 बकराह,आ0 233, कन्जुलईमान)

यह हुक्म इसलिए है कि जो दूध पिलाने की मुद्दत माँ मुक़र्रर कर लें, कोशिश करे कि बच्चे को बग़ैर वुज़ू दूध न पिलाये अब वह दो साल से चार साल की उम्र तक बच्चो को प्यारे आक़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में बतायें। उनकी पैदाइश के वाक़ियात सुनायें। जब प्यारे आक़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की विलादत हुई तो सारे जहान में ख़ुशबू ही ख़ुशबू फैल गई आसमान से सितारे ज़मीन की तरफ़ आगये हूर व मलाइका की कतारें लग गई वगैरह, हुज़ूर के मोजिज़ात के वाक़ियात सुनायें ताकि बच्चे के दिल मेंप्यारे आक़ा सल्लल्लाहोअलैहि वसल्लम की मोहब्बत पैदा हो और हुज़ूर सल्लल्लाहोअलैहि वसल्लम के तरज़े ज़िन्दगी पर चलने की कोशिश करें। चुनांचे माहिरीन कहते हैं कि इस उम्र में बच्चे पसन्द और नापसन्द का इज़हार करते हैं। अगर वालिदैन शुरू से बच्चे को हुज़ूर सल्लल्लाहोअलैहि वसल्लम के मोजिज़ात और औलिया–ए–किराम की करामतेंसुनाएँ तो बच्चे हुज़ूर सल्लल्लाहोअलैहि वसल्लम और औलिया–ए–इज़ाम से मोहब्बत और उनके नक़्शे क़दम पर चलेंगे। उनकी पसन्द वही होगी जो हुज़ूर सल्लल्लाहोअलैहि वसल्लम को पसन्द थी, वो वही पसन्द करेंगे जो सहाबा और औलिया–ए–किराम की पसन्द थी। लेकिन आज के इस पुरफितन दौर में अक्सर वालिदैन अपने



बच्चों को फिल्मी गाने ही सीखाते हैं किसी दुनियादार शख़्स की तारीफ़ करते हैं मनगढ़त कहानियाँ सुनाते हैं जो बच्चों के ज़हन के लिए मुज़िर (नुक़सानदेह) है। माहिरीन कहते हैं कि इस उम्र में बच्चे का ज़हन बन रहा (BUILD) होता है और हम बच्चों से फ़िज़ूलगोई और दुनियादारों की बातेंकरते हैं जिससे बच्चे की पसन्द दुनिया हो जाती है। दीने इस्लाम से कोई रग़बत और मोहब्बत नहीं रहती जो कि वालिदैन के लिए बाइसे अज़ाब है लिहाज़ा वालिदैन को चाहिए कि वह बच्चों को अम्बिया व औलिया व बुज़ुर्गानेदीन की ज़िन्दगी के वाक़ियात सुनाएँ। जैसा कि प्यारे आक़ा सल्लल्लाहोअलैहि वसल्लम इरशाद फ़रमाते हैं "अपनी औलादों को तीन खस्लतें (आदतें) सिखाओ, नबी–ए–करीम सल्लल्लाहोअलैहि वसल्लम से मोहब्बत , अहलेबैत से मोहब्बत और कुरआ़ने करीम से मोहब्बत।" (कन्ज़ुल आमाल, ज0 6 स0 40409)

अब चार साल से 7 साल की उम्र तक कुरआ़न अज़ीम की तालीम दें। सुन्नते मुस्तफ़ा सल्लल्लाहोअलैहि वसल्लम और आदाब सिखाएँ खाने–पीने , उठने–बैठने, चलने–फिरने वगैरह की सुन्नत व आदाब सिखाएँ और ख़ुद अमल करके दिखाएँ, अब चूँकि इस उम्र में बच्चे के ज़हन में सवालात पैदा होते हैं जैसे ज़मीन क्या है? आसमान क्या है? चाँद क्या है? सूरज क्या है? हम कहाँ से आये हैं? कहाँ जायेंगे? अल्लाह कौन है? कहाँ है? मोहम्मद सल्लल्लाहोअलैहि वसल्लम कौन हैं? वगैरह तो मुरब्बी (परवरिश करनेवाला) को चाहिए कि उनके सवालों के जवाब दें और उन्हें बतायें। ऐ मेरे प्यारे बेटे! हमारा मतलूब व मक़सूद अल्लाह तआ़ला है और अल्लाह के महबूब मोहम्मद सल्लल्लाहोअलैहि वसल्लम हैं, और मेरे प्यारे बेटे! अल्लाह अज़्ज़ा वजल्लाह व रसूल



सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की फरमाँबरदारी में और बातोंको मानने में ही दुनिया व आख़िरत की कामयाबी है। और बच्चे के ज़हन के मुताबिक़ उनके सवालों के माक़ूल जवाब दें। बाज़ लोग ऐसे होते हैं कि जब बच्चा सवाल पूछता है तो वो उन्हें धुतकार देतें हैं या उन्हें डाँट देते हैं और उन्हें उनके सवालों के जवाब नहीं देते, जिससे बच्चा मुरब्बी से दूरी इख़्तियार कर लेता है, और एक दिन हाथ से निकल जाता है। जिससे बच्चा किसी से भी सवाल पूछने से झिझकता है और अहम उलूम जानने से हमकिनार (दूर) हो जाता है।

अब 7 बरस से 10 बरस की उम्र तक नमाज़ सिखाएँ जैसाकि प्यारे आक़ा सल्लल्लाहोअलैहि वसल्लम इरशाद फ़रमाते हैं बच्चों को सात बरस की उम्र में नमाज़ सिखाओ और दस बरस होने पर मारो।" (अल–मुसतदरक, जि0 1 स0 258)

बच्चों को नमाज़ का पाबन्द बनाने के लिए आसान तरीक़ा यह है कि वालिदैन ख़ुद नमाज़ के पाबन्द बन जायें और वालिद जब मस्जिद को जाये तो बच्चे को साथ लेकर जाये, जैसाकि हदीसे पाक में आता है कि नबी–ए–करीम सल्लल्लाहोअलैहि वसल्लम मस्जिद में हसन या हुसैन रदि अल्लाहो तआ़ला अन्हु को साथ लाया करते थे। (अल–मुस्तदरक जि0 3 स0 165,66) उन्हें तरीक़े सिखाएँ कि क़याम कैसे करते हैं, सजदा कैसे करते हैं? वगैरह, उनको करके (Practical) बताये कि क़याम में जब खड़े होते हैं तो सजदे की जगह की तरफ़ देखते हैं, जब रुकू में जाते हैं तो पैर की तरफ़ देखते हैं जब सजदे में जाते हैं तो नाक की तरफ़ देखते हैं क़ायदे में जब बैठते हैं तो दामन की तरफ़ देखते हैं वगैरह फिर उन्हें कहें कि बेटा पढ़ो यक़ीन मानें इस तरीक़े से बच्चा बहुत जल्द नमाज़ का सही तरीक़ा सीख लेगा



और नमाज़ का पाबन्द हो जायेगा। इंशा'अल्लाह

बच्चों को नमाज़ की तालीम देना बाप वलिउल अम्र (हुक्म देने वाला) की ज़िम्मेदारी होती है और यह वाजिबात में से है, इब्ने कुदामा अल–मुक़द्दसी ने बाज़ उलमा से यह बात नक़ल की है कि बच्चे के सरपरस्त पर यह बात वाजिब है कि बच्चा 7 बरस का हो जाये तो उसे तहारत और नमाज़ की तालीम दें और उसका हुक्म दें। (अल–मुग़्न्ना जि0 1, स0 647)

लिहाज़ा वालिदैन को चाहिए कि इस उम्र में बच्चे को इल्मे तहारत (पाकी) नमाज़ की तालीम बड़े छोटे का अदब और नमाज़ के मसाइल वग़ैरह बतायें।

अब 10 साल से लेकर 14 साल की उम्र तक के बच्चे, इस उम्र में अपना रोल मॉडल चुनते हैं, उमूमन बच्चे अपने बाप को रोल मॉडल चुनते हैं और बच्ची भी अपनी माँ की तरह बनना चाहती है। इसलिए वालिदैन को चाहिए कि अपनी ज़िन्दगी को सुन्नते मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ढाल दें। नेक और कामयाब शख़्सियत बनें, ताकि आप की औलाद आपको अपना रोल मॉडल बनाने में फख़्र महसूस करे और इस उम्र में चाहिए के बच्चों को प्यारे आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वाक़ियात सुनाते रहें, औलिया व बुज़ुर्गाने दीन की ज़िन्दगी के वाक़ियात सनाते रहें, ताकि बच्चे किसी दुनियादार बेहूदा अदाकार (Actor) को अपना रोल मॉडल न बनायें और ना उसे अच्छा जानें। बल्कि उनका रोल मॉडल अम्बिया व बुज़ुरगाने दीन हो। फी ज़माना बच्चों का हाल यह है कि Tick-Tok या इसी तरह के कई App पर बेहूदापन कर रहे हैं और वालिदैन कुछ नहीं करते। बच्चों का भी यही हाल है, लड़कियाँ मर्द वाले कपड़े, जीन्स, शर्ट पहन लेती

हैं और मर्दों की मुशबिहत इख़्तियार करती हैं। चुनाँचे प्यारे आक़ा सल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन औरतों पर लानत फ़रमाई है जो मर्दों की मुशाबिहत करती हैं और उन मर्दों पर जो औरत की मुशाबिहत इख़्तियार करते हैं। (जामे तिर्मिज़ी जि0 2 ह0 2784)

लेकिन हाये अफ़सोस, आज लड़कियाँ इसी तरह के कई App पर मुजरा करती हैं, ना बाप का अदब व लिहाज़ है न भाई की इज़्ज़त का ख़्याल है, ना किसी की शर्म व हया है, गोया कि इनका ज़मीर मर गया है। यह वालिदैन की कोताही का सबब है, क्योंकि वालिदैन बच्चे और बच्चियों को शुरू से इस्लामी लिबास पहनने की तलकीन ही नहीं करते है। लिहाज़ा वालिदैन को चाहिए कि बचपन ही से बच्ची को लड़कों के कपड़े पहनने से रोकें और इस्लामी लिबास पहनने का हुक्म दें, ताकि बच्ची बुरे अफ़आल से बचे और औरों को बचाये। याद रखें वालिदैन अपने घर के निगहबान होते हैं, बच्चों का एहतिसाब करने का हक़ भी उन्हीं का है और रोज़े क़यामत उन्हीं से अहलेख़ाना के बारे में पूछा जायेगा। चुनाँनचे हज़रते अब्दुल्लाह बिन उमर रदि अल्लाहु तआ़ला अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: मर्द अपने घर वालों का निगरान है और उससे उसके मातहत अफ़राद के बारे में पूछा जायेगा।

(अलबुख़ारी व मुस्लिम, अहदम बिन हम्बल 52 र0 4495)

अब 14 बरस से 21 बरस तक की उम्र में वालिदैन को चाहिए कि बच्चों को अपना दोस्त बना लें क्योंकि अगर आप अपनी औलाद को अपना दोस्त बनाकर अच्छा इंसान नहीं बनायेंगे तो बुरे लोग उन्हें अपना दोस्त बना कर बुरा इंसान बना देंगे। बच्चा जिस काम को करना चाहता है उस काम के मुताल्लिक़ दीन

के जो मसाइल हैं उससे बच्चे को वाक़िफ़ करायें और निकाह व तलाक़ और हुकूक़े इंसानियत और दीगर दीन के मसाइल हैं उनसे रूशनास (सिखायें) करायें। चुनाँचे हज़रत अनस रदि अल्लाहो तआ़ला अन्हु से रिवायत है कि

طَلَبُ الْفِقْهِ حَتْمٌ وَاجِبٌ عَلیٰ كُلِّ مُسْلِم

तर्जुमाः फिक़ह का इल्म हासिल करना हर मुसलमान पर ज़रूरी और वाजिब है। (माख़ज़ फज़ाइले इल्म व उलमा स0 59)

अल्लाह की बारगाह में दुआ है कि अल्लाह तआ़ला हम सब कोइल्मे नाफ़े (फ़ायदा देने वाला) अता फ़रमाये और अपने घरों की सही निगरानी करने की इस्लाम के बतायेहुए कानून के मुताबिक़ अपने बच्चों को तालीम व तरबियत देने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। आमीन बिजाहे नबीइलकरीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

तरबियते औलाद के (4) मवाज़े

बच्चों की तरबियत चार जगहों से होती है:

1. घर
2. मुआशरा
3. मिम्मबर व मेहराब
4. स्कूल

1. घर (घर के अफ़राद)

इस दौरे जदीद में घर के बिगड़े हुए माहौल से बच्चों की इस्लामी तरबियत का होना दुशवार है। क्योंकि आज घरों के हालात फिल्मी बे–हयाई लड़ाई झगड़े और वालिदैन का मोबाईल



फोन में मशग़ूल होना बच्चों की तरफ़ ध्यान न देना वग़ैरह ऐसे घर के माहौल से बच्चों की तरबियत होना मुमकिन नहीं है। चुनाँचे वालिदैन को चाहिए कि सबसे पहले अपने घर का इस्लामी माहौल बनायें और बच्चों पर तवज्जो दें। क्योंकि वालिदैन अपने घर के निगरान होते हैं और रोज़े क़यामत उन्हीं से अहले खाना के बारे में पूछा जायेगा

जैसा हदीसे मुबराका में है हज़रते अब्दुल्ला बिन उमर से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया, मर्द अपने घर वालों का निगरान है और उससे उसके मातहत अफ़राद के बारे में पूछा जायेगा।

(अलबुख़ारी व मुस्लिम अहमद बिन हम्बल 52 र0 4495)

ज़मीन अच्छी हो लेकिन पानी ठीक न हो तो फसल ख़राब हो जाती है। घर अच्छा बना हो लेकिन घर में दीन न हो तो नस्ल ख़राब हो जाती है

2. मुआशरा (सोसायटी)

आज मुआशरे (समाज) का हाल यह है कि कोई शख़्स किसी के बच्चे को कोई ग़लत काम करता हुआ देखता है तो वो उसे रोकने के बजाये यह कहता है, हमें क्या यह कुछ भी करे अगर अपनी औलाद हो तो कुछ कहें भी दूसरे के बच्चों को समझाना तंबीह करना झगड़े को दावत देना है। अगर यही हाल रहा लोग दूसरे के बच्चों को बुरे काम से न रोकें तो इस तरह पूरा मुआ़शरा हलाक व बरबाद हो जायेगा। उसकी मज़ीद वज़ाहत आप इस वाक़िया से मालूम कर सकते हैं कि एक मरतबा कुछ लोग मिलकर सफ़र कर रहे थे और कश्ती में उन लोगों ने अपनी अपनी जगह मुकर्रर कर ली अपना अपना बिस्तर लगा लिया उनमें से एक



शख़्स अपनी जगह सुराख़ करने लग जाता है अब सारे लोग, यह कहें कि हमें क्या वह अपनी जगह पर सूराख़ कर रहा है तो थोड़ी देर के बाद जब सूराख़ होगा, फिर नीचे से पानी आयेगा जिससे सूराख़ करने वाला भी डूबेगा और जो लोग कश्ती में होंगे वह सारे लोग भी डूब जायेंगे, अब इस कश्ती में जो लोग थे उनका हक़ क्या बनता है कि सूराख़ करने वाले को हाथ पकड़ कर रोकें चाहे वह गुस्सा करे या नाराज़ हो और उस से कहें कि तुम ग़लत कर रहे हो।

आज गलियों में सड़कों पर बच्चे आवारा घूमते हैं कोई उन्हें कुछ कहने वाला नहीं याद रखें अगर आप किसी के बच्चे को नसीहत करेंगे तो आपके बच्चों को भी कोई अच्छी नसीहत करेगा, लिहाज़ा मुआ़शरे के लोगों को चाहिए कि किसी के बच्चे को ग़लत काम करता हुआ देंखें तो उसे मोहब्बत भरे अन्दाज़ में समझायें चुँनांचे इरशादे बारी तआ़ला है:

وَتَعَاوَنُوا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوٰى وَلَا تَعَاوَنُوا

عَلَى الْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَاتَّقُوا اللّٰهَ إِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَاب

तर्जुमा कंज़ुल ईमानः और नेकी और परहेज़गारी पर एक दूसरे की मदद करो और गुनाह और ज्यादती पर बाहम मदद न दो और अल्लाह से डरते रहो बेशक अल्लाह का अज़ाब सख़्त है। (सू0 माइदा, प0 6, आ0 2)

लिहाज़ा मुआशरे के हर फर्द की ज़िम्मेदारी है कि एक दूसरे की इस्लाह करे ताकि मुआशरा दुरुस्त रहे।

3. मिम्बर व मेहराब (मस्जिद व मदरसा, इमाम व उलमा):

तरबियते औलाद के लिए मिम्बर व मेहराब एक अहम जगह है आज के दौर में मुसलमानों का हाल यह है कि वालिदैन

अपने बच्चों को मस्जिद और मस्जिद के इमाम से दूर रखते हैं इस बिना पर बच्चे ईमानी तरबियत रुहानी तरबियत अख़लाक़ी तरबियत नफ़सियाती तरबियत से महरूम रह जाते हैं, लिहाज़ा वालिदैन को चाहिए कि बच्चे को मस्जिद और मस्जिद के इमाम, मदरसा व उलमा से रग़बत दिलायें ताकि बच्चे अच्छी तरबियत पा सकें:

अलहदीसः हज़रते अनस रदि अल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आलिमों की पैरवी करो इसलिए कि वह दुनिया और आख़िरत के चिराग़ हैं। (माख़ूज़ अज़ फ़ज़ाइले इल्म व उलमा स0 64,)

अलहदीसः हज़रते इब्ने अब्बास रदि अल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आलिमों के साथ बैठना इबादत है।

4. स्कूल (टीचरस)

तरबियते औलाद में असातिज़ा का भी एक अहम किरदार होता है जहाँ से बच्चे अदब व एहतिराम सीखते हैं लेकिन आज के इस पुरआशोब दौर में वालिदैन अपने बच्चों के लिए इस्लामी असातिज़ा (मास्टर) मुन्तख़ब (Selected) करने के बजाये बे–दीन, मुशरिक, काफ़िर, बे–तहज़ीब, ग़ैर इस्लामी, असातिज़ा (मास्टर) का इन्तिख़ाब (Selection) करते हैं।इस्लामी तहज़ीब हुक़ूकूल इबाद व हुक़ूद्दीन जैसे अहम फरीज़े से महरूम हो जाते है। हदीस प्यारे आक़ा सल्लल्लाहु अलैहीवसल्लम इरशाद फरमाते हैं दुनिया में तुम्हारे तीन बाप है। एक वो जो तुम्हारी पैदाइश का सबब है, दूसरा वो जिसने अपनी लड़की तुम्हारे निक़ाह में दी, तीसरा वो जिससे तुमने दौलत–ए–इल्म हासिल किया और इनमें बेहतरीन बाप तुम्हारा उस्ताद है।



लिहाज़ा वालिदैन को चाहिए की अपने घर का इस्लामी माहौल बनायें। अच्छे मुआशरे का इन्तेखाब (चुने) करें। मस्जिदों, मदारिस व इमामों औलमा से रगबत दिलायें इस्लामी स्कूल और दीनदार असातिज़ा से तालीम व तरबियत का इन्तिज़ाम करें। ताकि बच्चें की सही तालीम व तरबियत हो सके बच्चें की बेहतरीन तरबियत के लिए इन चार मक़ामात को दुरूस्त करें ताकि बच्चा अख़लाक़ी, नफ़सियाती, ईमानी, रूहानी, अदबी व मुआशरती तरबियत से सरफ़राज़ हो जाये, और दुनिया व आख़िरत में भलाई का सबब बनें।

बच्चों को पाँच किस्म के दोस्तों से दूर रखें

हर इन्सान का कोई न कोई दोस्त होता है। लेकिन अगर दोस्त अच्छा हो तो वो अच्छाई की राह दिखाता है। और अगर बुरा हो तो बुराई की तरफ माईल करता है। जैसा कि फरमाने मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम अज़मत निशान है आदमी अपने दोस्त के दीन पर होता है। उसे यह देखना चाहिए कि किस से दोस्ती करता है। (मुस्नद इमाम अहमद बिन हम्बल, मुस्नद अबी हुरैरा हदीस नं. 8000 34 जि. नं.3 सफा न.168 व 169)

इसलिए वालिदैन को चाहिए अपनी औलाद को अच्छे दोस्त के साथ रहने की तालीम दें क्योंकि बचपन का ज़माना बेशऊरी व बेख़याली का होता है। बच्चे बड़ों के रहम व करम के मौहताज होते है। लिहाज़ा वालिदैन को चाहिए





कि बच्चे को बतायें कि ए मेरे प्यारे बेटे हमारे आका सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम ने इरशाद फरमाया अच्छा साथी वो है कि जब तू खुदा को याद करे तो वो तेरी मदद करे और जब भूले तो वो याद दिलाये, (इख्वानू इबनुद्दुनिया सफ़ा नं. 46) और उन्हें बतायें कि हमारे बुजुर्गों ने पाँच क़िस्म के लोगों से दोस्ती करने से मना किया है। जिसके माननें में हमारी भलाई है पाँच किस्म के लोग दरज़ेज़ैल (नीचे) हैः–

1. झूठे से दोस्ती न करना इसलिए कि वो दूर को करीब दिखाएगा और करीब को दूर दिखाएगा और तुम्हें धोखे में रखेगा ।

2. किसी बखील (कंजूस) से दोस्ती न करना क्योंकि वो तुम्हें उस वक्त छोड़ देगा जब तुम्हें उसकी बहुत ज़्यादा जरूरत होगी और वो धोखा दे जायेगा।

3. फाजिर व फासिक (अल्लाह के हुकुम को तोड़ने वाले) से दोस्ती न करना जो अल्लाह के हुकुमों को तोड़ने वाले हैं।

वह तुम्हें एक रोटी के बदले बेच देगा फासिक बन्दे का क्या ऐतिबार कि जो अल्लाह के साथ वफादार नहीं वो बन्दों का वफ़ादार कैसे हो सकता है।

4. बेवकूफ से दोस्ती न करना इसलिए वो तुम्हें नफा पहुँचाना चाहेगा और नुकसान पहुँचा देगा।

5. कत–ए–रहमी करने वाले, रिश्ते नाते तोड़ने वाले , बेवफा इन्सान के साथ दोस्ती न करना कि बेवफा बिल–आख़िर बेवफ़ा ही होता है।



बच्चा अच्छा या बुरा कैसे बनता है?

किसी भी बच्चे के अच्छा या बुरा होने की चार वुजूहात होती हैं जिससे बच्चा अच्छा या बुरा बनता है। याद रखें कोई बच्चा बुरा नहीं होता बल्कि उन्हें बुरा बनाया जाता है। घर वाले या मुआशरे (समाज) वाले या स्कूल वाले उसे अच्छा या बुरा बनाते हैं। बच्चे के अन्दर अच्छी या बुरी आदतें होने की चार वजह हैं वो यह हैं:

1. बच्चे का किसी काम का होता हुआ देखना
2. बच्चे की काम के मुताबिक़ सोच व फ़िक्र का पैदा होना।
3. बच्चे की उस काम को करने की दिलचस्पी का होना।
4. बच्चे का उस काम के मुताल्लिक़ यक़ीन होना।

फिर बच्चे का उस काम को करना

अगर कोई बच्चा अच्छा या बुरा काम करता है तो वह यक बयक नहीं करता बल्कि वह सबसे पहले उस काम को करते हुए देखता है फिर उसके मुताल्लिक़ सोचता है फिर उसे वो काम अच्छा लग जाता है। फिर उसका दिल उस काम को करना चाहता है। बच्चा जब कोई काम करता है तो उसे यह पता नहीं होता है कि वह काम अच्छा है या बुरा है लिहाज़ा वह उस काम को अपना लेता है। लेकिन जब उस काम को इख़्तियार करने के बाद कोई रोकता है तो बच्चे को बुरा लगता है। गुस्सा हो जाता है, नाफ़रमान हो जाता है, बच्चा बिगड़ने लग जाता है, वह यह नहीं देखता कि कौन बोल रहा है उसे किसी से नहीं बल्कि उस काम से प्यार होता है। मस्लन आज हर बच्चा मोबाईल मेंमसरूफ़ है। या हर बच्चा मोबाईल इस्तेमाल करना चाहता है। उसे कुछ नहीं बल्कि सिर्फ़ मोबाईल चाहिए। ऐसा क्यों है? क्या कभी हमने सोचा? कि इतनी



कम उम्र में बच्चे मोबाईल का शिकार क्यों हो रहे हैं, तो असल वजह यह है कि आज घरों में माँ–बाप, भाई–बहन ,वगैरह सबके सब मोबाईल में मसरूफ़ रहते हैं। बाप Facebook पर मसरूफ़ है तो माँ What'sapp पर मसरूफ़ है, कोई Tiktok पर मसरूफ़ है, कोई Youtube पर मसरूफ़ है गोया हर फर्द मोबाईल का दीवाना है। मोबाईल चलाने में मसरूफ़ (Busy) और बच्चा उस काम को देख रहा होता है। बच्चा अपने छोटे से दिमाग़ से सोचता है फिर उसे वह काम करने को दिल करता है और वह यह देख कर यक़ीन कर लेता है कि सब लोग तो इसी में मुलव्विज़ (लगे) हुए हैं ज़रूर इसमें कोई न कोई ख़ूबी है। लिहाज़ा बच्चे मोबाईल की ज़िद करने लगजाते हैं, बच्चे भी मोबाईल माँगने लग जाते हैं और इतनी कम उम्र में वालिदैन बच्चे को मोबाईल दे देते हैं और कह देते हैं कि बच्चा ही तो है क्या चला पायेगा चुँनानचे बच्चे को भी Youtube लगा कर दे देते हैं और समझते हैं यह Youtube या Game ही तो चलायेगा। इससे कोई फर्क़ थोड़ी पड़ेगा या कुछ दूसरी चीज़ नहीं चलापायेगा। लेकिन कुछ दिन बाद बाप से ज़्यादा बच्चे को मालूमात हो जाती है। इतना बाप को भी मालूम नहीं होता कि मोबाईल में इतने Features (इतनी चीज़ें) हैं। बाप को बच्चे से पूछना पड़ता है कि बेटा इसमें रिंगटोन कैसे लगेगा वगैरह जिससे बच्चे अपने आपको काबिल (Talented) और वालिदैन को बेवकूफ़ समझते हैं। तो आप अन्दाज़ा लगायें क्या कोई अक़लमन्द होशियार (Talented) किसी बेवकूफ़ की बात सुनता है? उसकी कोई बात मानता है? नहीं न यही वजह है कि बच्चे आप की बात नहीं सुनते और न आप की बातो पर ध्यान देते हैं। क्योंकि बच्चे समझते हैं कि अम्मी–अब्बू से ज़्यादा मैं जानता हूँ और वह उलटा माँ–बाप को समझा देते हैं और वालिदैन



ख़ामोश हो कर रह जाते हैं। क्योंकि इतनी कम उम्र में आप ही ने मोबाईल दिया है ताकि बच्चे भी मोबाईल में मसरूफ़ रहें, हमें परेशान न करें, लेकिन असल माना में मोबाईल नहीं बल्कि ज़हर दे रहे होते हैं। वक़्ति तौर पर बच्चा परेशान नहीं करेगा। लेकिन बाद में बड़ा नुक़सान देगा। जैसाकि आज के अक्सर घरों में देखने को मिलता है। कि हमारी औलाद बिगड़ गई और नफ़रमान हो गई, बेहूदा हो गई, लेकिन जो कामयाब वालिदैन होते हैं वह इन चार वुजूहात को ज़हन (ध्यान) में रखते हुए बच्चों की परवरिश करते हैं। ताकि नेक व बाअख़लाक़ और बेहतरीन इंसान बनें। अपने घर के माहौल को दुरुस्त करते हैं। बच्चों को वक़्त देते हैं। बच्चों के सवालों के जवाब देते हैं। उनके मसाइल को हल करते हैं। उन्हें बुरे मुआशरे से दूर रखते हैं, बुरे साथियों से दूर रखते हैं, बुरी बातों से दूर रखते हैं, अच्छे लोगों की सोहबत में बिठाते हैं ताकि अच्छे बुरे की तमीज़ सीखे, बड़े–छोटे का अदब सीखे, और एक मोअद्दब व मोहज़्ज़ब और बाकिरदार व बाअख़लाक़ इंसान बनकर रहे।

मोबाईल फोन का ग़ैर ज़रूरी इस्तेमाल, दीने इस्लाम से दूरी

हमारे मुआशरे (समाज–Society) में ग़ैर मुस्लिम यहूद व नसारा और दीगर कौमें मुसलमान बच्चों को नौजवानों को दीने इस्लाम से दूर रखने, मुसलमानों को दीने इस्लाम से दूर करने, उसका मुख़ालिफ़ बनाने के लिए मुनज़्ज़म अंदाज़ में कोशिश कर रही हैं। इसके हुसूल के लिए उनके पास एक बड़ा ज़रिया मोबाईल है, जिसमें तरह

तरह के गेम्स अप्लोड करते हैं, तरह तरह के एप्स अप्लोड करते हैं ताकि मुसलमानों के बच्चे इल्मे दीन से दूर हो जायें। नमाज़ से दूर हो जायें, कुरआने अज़ीम की तिलावत से दूर हो जायें, यहाँ तक कि इस्लामी तहज़ीब (Culture) से दूर हो जायें। यहूदियों की साज़िश है कि धीरे–धीरे इस्लामी तहज़ीब को मिटा दिया जाये। आज हम उनका साथ दे रहे हैं। हम अपने बच्चों को मोबाईल देते हैं, गेम खेलने के लिए लेकिन कुरआन नहीं दे पातेपढ़ने के लिए। हम बच्चों को मोबाईल दे देते हैं तरह तरह के एप्स इस्तेमाल करने के लिए लेकिन दीनी किताबें नहीं देते हैं। दीनी तालीम हासिल करने के लिए जिसकी वजह से बच्चे दीनी तालीम व तरबियत से महरूम हो जाते हैं और दुश्मने इस्लाम अपने मक़सद में कामयाब होते जा रहे हैं। लिहाज़ा वालिदैन को चाहिए कि अपने बच्चे को कम उम्री में मोबईल इस्तेमाल करने को न दें क्योंकि माहिरीन (वैज्ञानिक–Scientist) के मुताबिक़ बच्चों को 14 साल के कम उम्र में मोबाइल चलाने को मुज़िर यानि नुक़सान देह बतया गया है। आज वालिदैन अपने बच्चों से जान छुड़ाने के लिए 2 या 3 साल के बच्चे को मोबाईल दे देते हैं। जबकि माँ–बाप को चाहिए कि इस उम्र में बच्चे को मोबाईल न दें, वरना इससे बच्चे को बहुत सारे नुक़सानात हैं, जिसके ज़िम्मेदार आप ख़ुद होंगे। कुछ नुक़सानात नीचे दिये गए हैं:

1. हाफ़िज़ा (याददाश्त) और नज़र कमज़ोर होना
2. सोचने और समझने की सलाहियत में कमी आजाना।
3. नींद का कम हो जाना।
4. जिसमानी नशओ नुमा का रुक जाना यानि कमज़ोर

हो जाना।

5. चिड़चिड़ापन आ जाना।
6. ज़हन कमज़ोर हो जाना
7. गुस्से (Depression) का शिकार हो जाना।

बच्चों को सज़ा देने का इस्लामी तरीक़ा

हमारे मुआशरे में वालिदैन अपनी औलाद से इतनी मोहब्बत करते हैं कि बच्चे को कभी भी सज़ा नही देते और कुछ वालिदैन अपनी औलाद को बेइन्तिहा मारते पीटते हैं। लेकिन सज़ा देने का सही तरीका क्या है? इससे लोग ना–आशना हैं, ज़्यादा लाड प्यार से भी बच्चें बिगड़ जाते हैं और मार–धाड़ से भी बच्चे बिगड़ जाते हैं। तो वालिदैन को चाहिए कि मुनासिब तरीक़े से बच्चों को सज़ा दें। बच्चे की इस्लाह व तरबियत के सिलसिले में इस्लाम का अपना एक मक़सूस तरीका–ए–कार है चुनाँचे इस्लाम यह तालीम देता है। अगर बच्चे को प्यार व मोहब्बत से समझाना फायदा देता हो तो मुरब्बी के लिए उससे कत–ए–तअल्लुक कर देना (उससे मिलना जुलना बन्द कर देना) व ऐराज़ करना दुरुस्त नहीं और अगर बच्चे से कत–ए–ताल्लुक करना और डाँटना डपटना मुफीद (फायदा देता) हो तो फिर उसको मारना पीटना दुरुस्त नहीं, हाँ अगर इस्लाह व तरबियत समझाने वाज़ व नसीहत डाँट–डपट के तमाम तरीके काम न आयें तो ऐसी सूरत में इतना मारने की इजाज़त है। जो हुदूद के अन्दर हो और ज़ालिमाना व बेरहम तरीके से न हो सज़ा देने के मुताल्लिक में उमूमन तीन तसव्वुरात पाये जाते हैं:

1. बाज़ लोग इस बात के क़ाइल है कि बच्चे की इस्लाह व तरबियत के लिये सज़ा बहुत ज़रूरी है। इस ख़्याल के हामी बाज़ औकात

सख़्त सज़ा को भी इलाज समझते हैं।

2. बाज़ माहिरीन (वैज्ञानिक) बच्चे के तालीम व तरबियत के लिए सज़ा को न सिर्फ़ गैर जरूरी बल्कि मुज़ीर (नुक्सान देने वाला) समझते हैं इन के ख़्याल में बच्चे सज़ा से सुधरने के बजाए बिगड़ जाते हैं। अगर वक़्ती तौर पर बच्चे में इस्लाह नज़र भी आये तो वो आरज़ी व वक़्ती ख़याल करते हैं।

3. इन दोनों तसव्वुरात से अलग तीसरा तसव्वुर है। यह तसव्वुर बच्चे की इस्लाह व तरबियत शफ़क़तों मोहब्बत से
की जाये है इस्लाह करने की सूरत में हलकी सी सज़ा भी दी जा सकती है।

मगर सज़ा के फौरन बाद हुस्ने सुलूक और मोहब्बत से तलाफी कर दी जाये। बच्चों को इतना प्यार मोहब्बत दिया जाये ताकि उसके दिल में कोई मैल बाकी न रहे इस्लामी निज़ाम व तरबियत की रूह भी यही तकाज़ा करती है।

नसीहत के 4 बेहतरीन औक़ात

अक्सर वालिदैन बच्चे को हर वक़्त डाँटडपट, वाज़ोनसीहत करते रहते हैं जिससे बच्चे परेशान हो जाते हैं। और कोई भी बात सुनने को तैयार नहीं होते, जिसकी वजह से बच्चे सुधरने के बजाए बिगड़ने लग जाते हैं और वालिदैन का वाज़ो नसीहत बेकार हो जाता है। क्योंकि इसका कोई असर नहीं पड़ता। इसलिए वालिदैन को चाहिए कि बच्चे को बेवक़्त वाज़ो नसीहत करने से गुरैज़ करें। ताकि बच्चा आपकी कुरबत में रहे और आपकी वाज़ो नसीहत को तसलीम करे क्योंकि बेहतरीन तरबियत व नसीहत जैसी कुरबत व उनसियत से मुमकिन है, डाँट–डपट और मार–ध

ााड़ से हरगिज़ वैसी मुमकिन नहीं। इसलिए नसीहत करने के औक़ात (समय) मुन्तख़ब कर लें। जिस वक़्त बच्चे सीखने और सुनने के मूँड में हों, ताकि आप जो भी नसीहत करें, बच्चे उस पर अमल करें।

नीचे दिये गए चार ऐसे औक़ात हैं जिनमें बच्चे अच्छी बात (Receptive Mood) सुनने के मूँड में होते हैं। उन वक़्तों में आप जो भी नसीहत करेगे वह बच्चों के दिलो दिमाग़ में ज़ाहिर, बैठ जायेगी और बच्चे उस पर अमल करेंगे। इंशा'अल्लाह तआ़ला

1. जब बच्चा रात में सोने लगे उस वक़्त बच्चा कुछ सुनने के मूँड (Learning Mood) में होता है इसलिए उस वक़्त बच्चे कहते हैं हमें कोई कहानी या किस्सा सुनाएँ उस वक़्त वालिदैन अपने बच्चोंको चूहे, बिल्ली, राजा महाराजा, मनगढ़त जैसी कहानियाँ सुना देते हैं। जिससे बच्चों के अन्दर चूहे, बिल्ली, राजा, महाराजा वाली नौटंकी वाली हरकतें आने लगती हैं और उससे औलाद बिगड़ती चली जाती है, इसलिए वालिदैन को चाहिए कि उस वक़्त बच्चों को नबियों, वलियों और नेक लोगों के क़िस्से, नसीहत आमेज़ वाक़ियात सुनायें। ताकि अच्छी नसीहतें मिलें और बच्चों के दिलों में अल्लाह अज़्ज़वजल का ख़ौफ़ और मोहब्बते रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और औलिया–ए–किराम की उलफ़त दिलों में बैठ जाये और उनकी मोहब्बत में बच्चा अल्लाह से डरने वाला और नेक व स्वालेह बन जाये।

2. जब बच्चा आपके साथ गाड़ी में बैठा हो तो उस वक़्त भी बच्चा कुछ बातें सुनने के मूँड (Learning

Mood) में होता है। इसलिए उस वक़्त बच्चा जो कुछ देखता है तो उसके बारे में पूछता है कि अब्बू यह क्या है? माँ वो क्या है? यह कैसे है? वो क्यों है? उस वक़्त हम डाँट–डपट कर के बच्चों को चुप करा देते हैं। जबकि वह बहुत क़ीमती वक़्त होता है। उस वक़्त चाहिए कि बच्चों को उनके सवालों के जवाब दें और अच्छी–अच्छी बातें करें। और अच्छी नसीहतें करें ताकि बच्चे आपकी नसीहतों पर अमल करें।

3. जब बच्चे खाने पर बैठते हैं तो उस वक़्त भी बच्चे सुनने के मूँड (Learning Mood) में होते हैं। बाज़ जाहिल वालिदैन उस वक़्त बच्चों से कहते हैं कि खाना खाते वक़्त बात नहीं करते हाँलाकि यह मजूसियों (आग के पुजारियों) का तरीक़ा है और बाज़ उस वक़्त दूसरों की बुराइयाँ करते रहते हैं। खाने में ऐब निकालते हैं, सुन्नत के तरीक़े के ख़िलाफ़ खाना खाते हैं। जबकि होना यह चाहिए कि उस वक़्त वालिदैन अपने बच्चों को खाने के आदाब बतायें। सुन्नते मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहिवसल्लम के तरीक़े बतायें। ताकि बच्चे को खाने के आदाब व सुन्नतें मालूम हो जायें। इस वक़्त में भी आप नसीहत कर सकते हैं यह भी नसीहत का सही वक़्त है।

4. जब बच्चा बीमार हो उस वक़्त भी बच्चे बातें सुनने के मूँड (Learning Mood) में होते हैं, उस वक़्त आप जो भी नसीहत करेंगे वो बच्चों के दिल व दिमाग़ में नक़्श हो जायेगी। आप अपने बच्चों को जो भी नसीहतें करनी हों तो इन चार औक़ात (समय) में करें। इंशा'अल्लाह अज़्ज़ावजल बच्चे ज़रूर आपकी नसीहतों पर अमल करेंगे।

बेवक़्त बच्चे को कभी नसीहत न करें क्योंकि बच्चे कभी खेल या किसी और मूड में होते हैं, हम बच्चों को नसीहत करना शुरू कर देते हैं जिससे बच्चे बद्मिजाज़ हो जाते हैं और आपकी बातों को अहमियत नहीं देते हैं। इस वजह से बच्चे नाफ़रमानी करना शुरू कर देते हैं और फिर हम अपने बच्चों से मार पीट कर काम लेते हैं और अपना बाग़ी बना देते हैं।

फरमाने हज़रत अली रदि अल्लाहुतअ़ला अन्हु जिसने किसी को अकेले में नसीहत की उसने उसे संवार दिया और जिसने किसी को सब के सामने नसीहत की उस ने उसे मज़ीद बिगाड़ दिया।

बच्चों के कान में अज़ान और उसके आदाब

शरीअ़ते इस्लामिया में बच्चे की विलादत (पैदाइश) के फौरन बाद बच्चे के कान में अज़ान देनेका हुक्म है। चुँनानचे, अब्दुल्लाह अबी राफ़े रदि अल्लाहो तआ़ला अन्हु, अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को देखा के उन्होंने हसन रदि अल्लाहो तआ़ला अन्हु के दोनों कान में नमाज़ वाली अज़ान दी, जब वो फातिमा रदि अल्लाहो तआ़ला अन्हा के बतने अक़्दस से पैदा हुए।

(तिरमिज़ी स0 1516, अबू दाऊद स0 5105, तिबरानी स0 931)

अल्लामा इब्ने क़ईम अज़ान की हिक्मत बयान करते हुए फरमाते हैं, कि जब इंसान के कान में पहली आवाज़ अज़ान के कलमात दाख़िल होंगे जिन में रब की किबरियाई व बढ़ाई और

अज़्मत व जलाल है जिन में कामयाबी व निजात की दावत है तो वह बच्चे के लिए ख़ैर व बरकत का सबब होंगे।

(तोहफ़तुल मौदूद बाअहकामे मौदूद स0 37)

आला हज़रत अज़ीमुल बरकत इमाम अहमद रज़ा ख़ान अलैहिर्रहमतुर्रिज़वान अज़ान के मुताल्लिक़ फ़तावा रज़विया शरीफ़ में तहरीर फ़रमाते हैं कि जब बच्चा पैदा हो तो फौरन सीधे कान में अज़ान और बायें कान में तकबीर कहे। ताकि बच्चा ख़लले शैतान और उम्मुस्सुबियान से बचे।

(फ़तावा रज़विया जि0 24 स0 452)

लिहाज़ा बच्चे के कान में अज़ान देने में ताख़ीर नहीं करनी चाहिए। कि मिर्गी के मर्ज़ होने का अन्देशा है, बेहतर यह है कि बच्चा पैदा हो जाये तो उसे नीम (आधा) गरम पानी से नहलायें फिर सीधे कान में चार बार अज़ान और उलटे कान में इक़ामत कहें। इंशा'अल्लाह बलायें दूर होंगी। (अल–मलफ़ूज़ाते आला हज़रत स0 418 माख़ज़ बाहवाला सोएबुल ईमान जि0 4 0 39, अल–हदीस 8619)

अज़ान व इक़ामत कहने में अजीब नुक़्ते की बात

बाज़ बुज़ुर्ग इसकी अज़ीबो गरीब वजह बयान फ़रमाते हैं कि अज़ान व इक़ामत के ज़रीये यह बतलाना मक़सद है कि दुनिया में इंसान इतना वक़्त रहता है जितना वक़्त इक़ामत व जमाअ़त ख़ड़ी होने के दरमियान होता है, बस अपनी ज़िन्दगी को इस ख़्याल सेगुज़ारना और अपनी ज़िन्दगी को आख़िरत की तैयारी में लगादेना इसलिए कि तेरी अज़ान भी हो चुकी है और तेरी इक़ामत

(तकबीर) भी हो चुकी है, अब सिर्फ़ नमाज़ बाक़ी है और नमाज़ केबाद आख़िरत की तरफ़ जाना है। इसीलिए नमाज़े जनाज़ा के शुरू में न अज़ान होती है और न इक़ामत, जैसे ही जनाज़ा आता है सफ़ें दुरुस्त की जाती हैं और बस अल्लाहु अकबर कह कर नमाज़ शुरू हो जाती है। लेकिन इंसान धोखे में है कि मेरी ज़िन्दगी मेरी उम्र 50 या 60 साल की होगी। हाँलाकि आख़िरत के मुक़ाबले में यह ज़िन्दगी एक लम्हे की भी नहीं है। यहाँ दुनियाँ में आया और थोड़ी देर बाद रुख़सत हो गया, लौट गया।

बस इतनी–सी हक़ीक़त है, फरेब ख़्वाबे हस्ती की
कि आँखें बन्द हों और आदमी अफ़साना बन जाय

आँख बन्द होती है और पूरी ज़िन्दगी का दरवाज़ा बन्द हो जाता है।

तहनीक

तहनीक यह है कि खुजूर को अच्छी तरह चबायें,जब वह बारीक हो जाये तो उसे बच्चे के मुँह में रख दें, ताकि बच्चा उसे घोट ले, जिस से बच्चे के पेट में जो सब से पहली चीज़ जायेगी वह तहनीक की खजूर हो। अगर खुजूर न मिले तो इस सूरत में कोई भी मीठी चीज़ से तहनीक की जा सकती है, जैसेः शहद, गुड़, छुआरा, वग़ैरह।

अल–हदीसः हज़रत अस्माये बिनते अबी बकर रदिअल्लाहु तआला अन्हुमा से रावी कहती हैं। कि अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रदिअल्लाहु तआला अन्हु मक्का मुकर्रमा ही में हिजरते कुबा से क़ब्ल मेरे पेट में थे बाद हिजरत कुबा में

यह पैदा हुए मैं उन को रसूले मुअज़्ज़म सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में लाई और हुज़ूर पुरनूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की गोद में रख दिया फिर हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खुजूर मंगाई और चबा कर उनके मुँह में रख दी और उनके लिए दुआ–ए–बरकत की। (माख़ूज़ अज़ बहारे शरीयत, हिस्सा पाज़दहम, अक़ीक़ा का बयान)

फरमाने आला हज़रत (रज़िअल्लो तआला अन) आला हज़रत इमाम अहले सुन्नत इमाम अहमद रज़ा खान अलैही रहमतुर रिज़वान फरमाते है। छुआरा वगैराह कोई मीठी चीज़ चबाकर उसके मूंह में डाले के हलावते अखलाक की फाले हसन है।

वालिदैन पर औलाद के हुकूक कितनेहैं?

जिस तरह औलाद पर वालिदैन के हुकूक़ हैं उसी तरह औलाद के भी वालिदैन पर हुकूक़ हैं, वालिदैन पर औलाद के हुकूक़ जो आला हज़रत अज़ीमुल बरकत इमाम अहमद रज़ा ख़ान अलैहिर्रहमतु व रिज़वान फ़तावा–ए–रज़विया शरीफ़ में तहरीर फ़रमाते हैं वह अस्सी (80) हैं उनमें से चन्द हुकूक़ नीचे दिये गये हैं:

1. जब बच्चा पैदा हो फौरन सीधे कान में अज़ान बायें कान में तकबीर कहें कि ख़लले शैतान व उम्मुस्सुबियान (मिर्गी) से बचेगा।
2. छुआरा वग़ैरह चबा कर उसके मुँह में डालें कि हलावते अख़लाक़ की फालेहसन है।

3. सातवें और न हो सके तो चौदवें ना हो सके तो इक्कीसवें दिन अक़ीक़ाह करें। दुख़्तर (लड़की) के लिए बकरी, और पिसर (लड़का) के लिए दो बकरे की उसमें बच्चे का रहन (कर्जा) छुड़ाना है।

4. एक रान दाई को दे, कि बच्चे की तरफ़ से शुकराना है।

5. सर के बाल उतरवायें।

6. बालों के बराबर चाँदी ख़ैरात करे।

7. सर पर ज़ाफ़रान लगायें।

8. नाम रखे, यहाँ तक कि कच्चे बच्चे का भी जो कम दिनों का गिर जाये वरना वह बच्चा अल्लाह तआ़ला के यहाँ शाकी (शिकायत करने वाला) होगा।

9. बुरा नाम न रखें कि फ़ालेबद है।

10. मारने बुरा कहने में एहतियात रखें।

11. प्यार में झूठे लकब बेक़द्र नाम न रखे क्योंकि पड़ा हुआ नाम मुशकिल से छूटता है।

12. बच्चे को पाक कमाई से रोज़ी दें कि नापाक माल नापाक ही आदतें डालता है।

13. ज़बान खुलते ही अल्लाह अल्लाह, पूरा कलमा ''ला इलाहा इल्लल्लाहु'' फिर पूरा कलाम–ए–तय्यबा सिखाऐं।

14. ज़मान–ए–तालीम में एक वक़्त खेलने का भी हो। तबीयत नशात (फरहत व सुरूर) पर बाक़ी रहे।

15. मारे तो मुँह पर न मारे।

16. निहार, ज़िनहार बुरी सोहबत में न बैठने दे कि यारे बद मारे बद से बद्तर है।

17. जब 10 बरस का हो जाये तो मार कर नमाज़ पढ़ाये।



18. जब जवान हो शादी कर दें, शादी में वही रियायत क़ौम व दीन सीरत व सूरत, मलहूज़ रखे।

19. उसे मीरास (विरासत) से महरूम न करे, जैसे बाज़ लोग अपने किसी वारिस को न पहुँचने की ग़र्ज़ से कुल जायदाद दूसरे वारिस या ग़ैर के नाम लिख देते हैं।

20. अब जो ऐसा काम कहना हो जिसमें नफ़रमानी का एहतिमाल हो तो उसे अम्र व हुक्म के सेगे (तौर) से न कहे बल्कि बरुफ़्क़ (साथी) व नर्मी से बतौरे मशवरा कहे कि बलाये उकूक़ में न पड़ जाये।

मज़ीद हुक़ूक़े औलाद जानने के लिए
(फतावा–ए–रज़विया जि0 24, स0 456 का मुतआ़ला करे)

तरबियते औलाद के 10 आसान तरीक़े

1. जो वालिदैन घर में दाख़िल होने के क़ब्ल दरवाज़े पर दस्तक देते हैं और सलाम का अहतिमाम करते हैं और अपने बीवी बच्चों को देख कर मुस्कुराते हैं तो इस तरह उनके बच्चे भी इस तरज़े अमल को इख़्तयार कर लेते हैं।

2. जो वालिदैन अज़ान सुनते ही टेलीवीज़न, या मोबाइल फोन चलाना बन्द कर देते हैं यहाँ तक कि हर काम करना बन्द कर देते हैं और नमाज़ की तैयारी करने लगजाते हैं तो अनक़रीब वो अपने बच्चों को इस अमल से नमाज़ का पाबन्द बनालेंगे। इंशा'अल्लाह

3. जो लोग अपने वालिदैन का अदब व ऐहतिराम करते हैं और उनके हाथों को चूमते हैं और उनकी ख़िदमत करते हैं तो जल्द ही उनके बच्चे भी उनके हाथ चूमेंगे और उनका अदबो ऐहतिराम व फ़रमाँबरदारी करेंगे।



4. जो वालिदैन घरेलू काम काज में एक दूसरे का हाथ बटाते हैं तो इससे उनकी औलाद भी एक दूसरे की मदद करना और बाहम तआवुन करना पसन्द करेंगे।

5. जो माँ मुतावातिर पाबन्दी के साथ नमाज़, तिलावते कुरआन, हिजाब करेंगी तो माँ के इस तरज़े अमल से उनकी बेटी भी नमाज़, तिलावते कुरआन, हिजाब की पाबन्द हो जायेंगी।

6. जो वालिदैन बाहमी इत्तिफ़ाक़ व इत्तिहाद मेल–मिलाप, के साथ ज़िन्दगी गुज़ारते हैं और अपनी औलाद के सामने लड़ाई झगड़े और आवाज़ बुलन्द करने से गुरैज़ (परहेज़) करते हैं तो उनके बच्चे अपने वालिदैन और एक–दूसरे के साथ उलफ़त व मोहब्बत और आपस में इत्तिफ़ाक़ व इत्तिहाद से ज़िन्दगी गुज़ारते हैं।

7. जो वालिदैन सिलारहमी करते हैं अपने अज़ीज़ व अक़ारिब के साथ ऐहसान करते हैं और उनसे मोहब्बत के रिश्ते बरक़रार रखते हैं तो उनकी औलाद भी इस अख़लाक़ से सिलारहमी और हुस्ने सुलूक करना सीखती है।

8. जो बाप बाज़ उमूर (काम) में अपने बीवी, बच्चों से राय मशवरा लेते हैं और उनके साथ बैठ कर बात–चीत करते हैं उनकी राय का ऐहतिराम करते हैं तो इससे उनकी औलाद भी आपस में बात चीत बाहमी राय मशवरा और सीधा रवय्या अपनाने की आदत सीखती है।

9. जो वालिदैन अपनी औलाद के साथ सच्चाई का बरताव अपनाते हैं तो उनकी औलाद भी इससे सच्चाई सीखती है और जो वालिदैन अपनी औलाद के साथ वादावफ़ाई करते हैं तो उनकी औलाद भी वादावफ़ाई सीखती हैं।

10. जो वालिदैन सफ़ाई सुथराई का ऐहतिमाम करते हैं एक मुनज़्ज़म और मुरत्तब व ज़िम्मेदाराना ज़िन्दगी गुज़ारते हैं तो

उससे वह अपने बच्चों को एक मुरत्तब व मुनज़्ज़म व ज़िम्मेदाराना ज़िन्दगी गुज़ारना सिखाते हैं।

इन्तिबाह (नोट): बच्चो की तरबियत का आसानतरीन तरीक़ा यह है कि उनके सामने अमली नमूना पेश किया जाये।

मुरब्बी के सही रवय्यों के बच्चों पर मुस्बत असरात

1. मुरब्बी हौसला अफ़ज़ाई करेगा बच्चा आगे बढ़ेगा
2. मुरब्बी एतिमाद करेगा बच्चा ज़िम्मेदार बनेगा।
3. मुरब्बी बरदाश्त करेगा बच्चा ग़लती का ऐतिराफ़ करेगा
4. मुरब्बी माफ़ करेगा बच्चा अहसानमन्द होगा
5. मुरब्बी इज़्ज़त करेगा बच्चा इज़्ज़त करना सीखेगा
6. मुरब्बी मुशावरत करेगा बच्चा अपना मसअला आसानी से बयान करेगा।
7. मुरब्बी दिलचस्पी लेगा बच्चे की दिलचस्पी बढ़ेगी
8. मुरब्बी मेहनत करेगा बच्चा मेहन्ती होगा
9. मुरब्बी वादा पूरा करेगा बच्चा ज़ुबान का पूरा और वादा का निभाने वाला बनेगा।
10. मुरब्बी वक़्त की पाबन्दी करेगा बच्चा पाबन्दे वक़्त बनेगा
11. मुरब्बी इंसाफ़ करेगा बच्चा हक़ाइक़ को तसलीम करेगा
12. मुरब्बी नफ़ासत पसन्द होगा बच्चा मोहज़्ज़ब बनेगा।

बच्चे को बवक़ार, पाबन्दे सुनन, मोअद्दब, मोहज़ब, ज़िम्मेदार, मेहनती वग़ैरह बनाने के लिए वालिदैन को इन

उमूर पर तवज्जों देना बे–हद ज़रूरी है। क्योंकि बच्चे आप के अन्दाज़े तकल्लुम और रवय्यों को बग़ौर देख रहे होते हैं और उसे अपने ज़हन में ज़ब्त (नक़्श) कर लेते हैं और अपने अमल में लाते हैं। इस लिए वालिदैन को चाहिए कि बच्चे में मुस्बत रवय्या लाने के लिए वालिदैन को मुस्बत रवय्या पेश करना बे–हद ज़रूरी है।

याद रखें! बच्चे आपको देखते और सुनते हैं, आपके रिश्तेदारों दोस्त व अहबाब के साथ सुलूक बच्चों में सरायत, लिहाज़ा हर मामले से पहले सोचे कि आप बच्चों के दिल व दिमाग़ में क्या भर रहे हैं।

क्योंकि बच्चे आप की नसीहत से नहीं, बल्कि आपके अमल से सीखते हैं।

वालिदैन से तरबियते औलाद के हवाले से (20) अहम सवालात?

आप के हर अमल आपकी औलाद बग़ौर देख अपनाती है। आप की हर आदत उन की शख़्सियत का हिस्सा बनती है, आप ज़बान से लाख नसीहतें करें, अगर अच्छी मिसाल कायम नहीं करेंगे तो औलाद सही राह पर नहीं आयेगी, इसलिए अपने लिए नहीं तोबच्चों की दुनिया व आख़िरत की ख़ातिर अपनी इस्लाह पर तवज्जो ज़रूर दें, इस हवाले से आप सेचन्द सवालात हैं जो दर्जेज़ेल हैं, इन सवालात का अमली जवाब देकर अपनी औलाद के लिए एक बेहतरीन मिसाल क़ायम करें:–

1. आपके बच्चे आप को घर में मोबाइल में ज़्यादा

मशग़ूल देखते हैं, या क़ुरआन में?

2. फिल्मों से दिल बहलता देखते हैं, या ज़िक्रे अल्लाह?

3 नमाज़ों में पाबन्दी देखते हैं, या ला परवाह?

4. दूसरों की ग़ीबत करता देखते, या तारीफ़?

5. नौकरों से बद्तमीज़ी, हिक़ारत और बद्अख़्लाक़ी करता देखते हैं, या सब कोइज़्ज़त देता हुआ?

6. रिश्तेदारों का ख़्याल रखते और सिला रहमी करता देखते हैं, या बात बात पर कत–ए–तअ़ाल्लुक़ करता हुआ?

7. अकसर खुशमिज़ाज और मुस्कुराता हुआ देखते हैं, या लड़ता, झगड़ता और अख़्खड़ मिज़ाज?

8. हर वक़्त माल की हिर्स में मुब्तिला देखते हैं, या क़नाअत करता?

9. हर वक़्त ला–हासिल के ग़म में देखते हैं, या हासिल शुदा के शुक्र में?

10. आपको मेहनत और जद्दो जहद करता देखते हैं, या सुस्त, काहिल, बहानेबाज़ और काम चोर?

11. अपने शरीके हयात के साथ मोहब्बत, इज़्ज़त, और भलाई का रवय्या देखते हैं, या झगड़े, हिक़ारत, बे–ग़ैरती का?

12. आपको अपने माँ–बाप की ख़िदमत, फरमाँबरदारी, और तकरीम करता देखते हैं, या उन से बद्तमीज़ी और बे–इकरामी करता?

13. आप को सिग्रेट, तम्बाकू वग़ैरह का नशा करता

देखते हैं, या वरज़िश और दीगर सेहतमन्द सरगर्मियों में?

14. आपका लगाव दीने इस्लाम से देखते हैं, या दुनिया से?

15. आपको दीन की बातें करता हुआ देखते हैं, या सिर्फ़ दुनिया की?

16. आपको आजिज़ी करता हुआ देखते हैं या तकब्बुर करता हुआ?

17. आपको सुन्नते मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर अमल करता देखते हैं, या यहूद व नसारा के तरीक़े पर?

18. आपको ख़ुदा से डरता हुआ देखते हैं या दुनिया वालों से?

19. आपको अच्छे लोगों व उलमा में बैठता देखते हैं या बेहूदा आवारा लोगों में?

20. आपको बच्चे वादा ख़िलाफ़ी करता देखते हैं या वादा पूरा करता हुआ?

याद रखें! बच्चे आपको देखते और सुनते हैं, आपका रिश्तेदारों, दोस्त व अहबाब के साथ सुलूक बच्चों में सरायत कर जाता है। लिहाज़ा हर मामले से पहले सोंचे कि आप बच्चों के दिल व दिमाग़ में क्या भर रहे हैं।

बच्चे आपकी नसीहत से नहीं बल्कि आपके अमल से सीखते हैं।



नेक वा स्वालेह औलाद के लिए दुआ

رَبِّ هَبْ لِیْ مِنَ الصّٰلِحِیْنَ

जिस शख़्स को नेक व स्वालेह औलाद की तमन्ना हो वो इस आयते करीमा को हर नमाज़ के बाद (100) मरतबा का विर्द करे, इन'शा अल्लाह तआला नेक व स्वालेह औलाद होगी।

बच्चों को सुन्नते मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का पाबन्द बनाने की दुआ

﴿اَللّٰھُم﴾ رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ اَزْوَاجِنَا وَذُرِّيّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْيُنٍ وَّ اجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِيْنَ اِمَامًا

हर नमाज़ के बाद अव्वल आख़िर एक मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़कर यह दुआ पढ़ लें, इन'शा अल्लाह तआला बच्चे पबन्दे सुन्नत बन जायेंगे।

ना फरमान औलाद के लिए वज़ीफ़ा

"या शहीदो" जिस की औलाद ना फ़रमान होगई हो वह बच्चे के सर पर हाथ रख कर इस इस्मे मुबारक को 21 मरतबा अव्वल आख़िर 3 मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़ कर दम करे, इन'शा अल्लाह फ़ायदा होगा।



बच्चों की बुरी आदतें छुड़ाने के वज़ाइफ़

''या हमीदो'' जिस बच्चे के अन्दर बुरी आदतें हो गई हों तो वालिदैन को चाहिए कि (45) दिन तक मुतावातिर इस इस्म को (93) मरतबा, अव्वल आख़िर (21) मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़ कर किसी चीज़ पर दम कर के खिलायें, इन'शा अल्लाह बुरी खस्लतें दूर हो जायेंगी।

नज़रे बद् दूर करने का वज़ीफ़ा

وَ اِنْ یَّکَادُالَّذِیْنَ کَفَرُوْالَیُزْلِقُوْنَکَ بِاَبْصَارِ ھِمْ لَمَّا سَمِعُوْاالذِّکْرَ
وَیَقُوْلُوْنَ اِنَّہٗ لَمَجْنُوْنٌ

किसी बच्चे को नज़रे लग जाये चाहे कितनी सख़्त हो इस आयते करीमा को (11) मरतबा पढ़ कर दम करने से इंशा'अल्लाह शिफ़ा होगी।

बच्चे के इल्म में इज़ाफ़े के लिए वज़ीफ़ा

''या अलीमु'' जो बच्चा पढ़ने लिखने में कमज़ोर हो उसको रोज़ाना (41) मरतबा या ''अलीमु'' अव्वल आख़िर (11) मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़ पानी में दम कर के पिलायें। इक्तालीस दिन तक मुतावातिर यह अमल करे। इन'शा अल्लाह बच्चा पढ़ने में तेज़ हो जायेगा।

जो बच्चा डरता हो उसके लिए वज़ीफ़ा

''या हसीबो'' जो बच्चा रात में डरता हो या किसी का ख़ौफ़ खाता हो तो उसे इस इस्मे शरीफ़ को (70) मरतबा अव्वल



व आख़िर (11) मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़कर बच्चे पर दम करे, इन'शा अल्लाह मुफ़ीद साबित होगा।

बच्चे का पढ़ने लिखने में दिल न लगता हो उसका वज़ीफ़ा

''या क़य्यूमो'' जिस बच्चे का दिल पढ़ने लिखने या काम में न लगता हो तो उस इस्मे मुबारक को (101) मरतबा अव्वल व आख़िर (11) मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़ कर किसी मीठी चीज़ पर दम कर के इक्तालीस दिन तक खिलायें।

इम्तिहान में कामयाबी के लिए वज़ीफ़ा

فَاِنَّ حَسْبَکَ اللّٰہُ ھُوَالَّذِیْٓ اَیَّدَکَ بِنَصْرِہٖ وَبِالْمُؤْمِنِیْنَ

इम्तिहान या किसी काम में कामयाबी के लिए उस आयत को जाने से पहले (7) मरतबा पढ़ लिया करें।





